वे व्यक्ति थे ... का प्रवक्ता ... शर्मा
ने अपने विचारों का प्रवक्ता ... होरी और मेहता के गुणों को यदि मिला दिया
का विचार है कि होरी और मेहता के गुणों को यदि मिला दिया जाय तो प्रेमचंद का अपना व्यक्तित्व निर्मित होता दिखाई देगा। मेहता जी निश्चित रूप से गोदान के एक आदर्शवादी चरित्र के रूप में पाठकों पर अपनी छाप छोड़ते हैं।

रायसाहब अमरपाल सिंह का चरित्र

गोदान उपन्यास के प्रमुख पात्रों में रायसाहब अमरपाल सिंह का चरित्र भी अपनी विशिष्टताओं के कारण वर्ग चरित्र का उदाहरण बन गया है। वे अवध प्रान्त के एक जमींदार हैं तथा उनमें वे सभी विशेषताएं तथा गुण-अवगुण विद्यमान हैं जो तत्कालीन जमींदारों में कमोवेश दिखाई पड़ते थे। इस प्रकार वे जमींदार वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले वर्ग चरित्र के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किए गए हैं। रायसाहब सेमरी ग्राम में रहते हैं, कौंसिल के मेम्बर हैं, सभाचतुर व्यक्ति हैं, अच्छे वक्ता हैं। वे राष्ट्रवादियों से भी सम्पर्क रखते हैं और अंग्रेज हुक्कामों एवं अफसरों को भी डालियां भिजवाते हैं।

रायसाहब को अच्छी तरह पता है कि जमींदारी प्रथा अब अधिक दिनों तक नहीं चलेगी। होरी के समक्ष अपनी वास्तविक स्थिति को बखान करते हुए वे कहते हैं, "**तुम हमें बड़ा आदमी समझते हो? हमारे नाम बड़े हैं, पर दर्शन थोड़े। .....बड़े आदमियों की ईर्ष्या और बैर केवल आनन्द के लिए है। हम इतने बड़े आदमी हो गए हैं कि हमें नीचता और कुटिलता में ही निःस्वार्थ और परम आनन्द मिलता है।**"

रायसाहब ने होरी के समक्ष अपना दुखड़ा सुनाते हुए उन परिस्थितियों का उल्लेख किया है जिनके कारण वे किसानों पर अत्याचार कर धन वसूलने को विवश हैं। प्रेमचन्द ने एक जमींदार के मुख से उन परिस्थितियों का कच्चा चिट्ठा पेश करते हुए उसे वास्तविकता के निकट लाने का प्रयास किया है। रायसाहब होरी से कहते हैं कि मेरी रियासत पर पलने वाले मेरे ही तमाम कुटुम्बी मुझसे जलते हैं। मानव स्वभाव के पारखी रायसाहब अपने कुटुम्बियों के बारे में बेबाक राय व्यक्त करते हुए होरी से कहते हैं—**'अरे और तो और हमारे चचेरे, फुफेरे, ममेरे, मौसरे भाई जो इसी रियासत की बदौलत मौज उड़ा रहे हैं कविता कर रहे हैं और जुए खेल रहे हैं, शराबें पी रहे हैं, ऐयाशी कर रहे हैं, वह भी मुझसे जलते हैं। आज मर जाऊं तो घी के चिराग जलाएं।**"

वे अच्छी तरह जानते हैं कि सब उन्हें लूट रहे हैं। दुनिया उन्हें सुखी समझती है क्योंकि उनके पास इलाके, महल, सवारियां, नौकर-चाकर, वेश्याएं सब कुछ हैं, पर वे सुखी नहीं हैं क्योंकि उनकी इंसानियत मर गई है, आत्मबल नष्ट हो गया है तथा उनका स्वाभिमान समाप्त हो गया है। जमींदारी प्रथा का

कर रहे हैं, [illegible] मर जाऊं तो घी के चिराग जलाएं।''

वे अच्छी तरह जानते हैं कि सब उन्हें लूट रहे हैं। दुनिया उन्हें सुखी समझती है क्योंकि उनके पास इलाके, महल, सवारियां, नौकर-चाकर, वेश्याएं सब कुछ हैं, पर वे सुखी नहीं हैं क्योंकि उनकी इंसानियत मर गई है, आत्मबल नष्ट हो गया है तथा उनका स्वाभिमान समाप्त हो गया है। जमींदारी प्रथा का अवसान उन्हें समीप ही दीख रहा है। वे स्वीकार करते हैं कि, **''बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है। मैं उस दिन का स्वागत करने को तैयार बैठा हूं। ईश्वर वह दिन जल्द लाए। वह हमारे उद्धार का दिन होगा। हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं।''**

रायसाहब कृषकों के शुभेच्छु हैं किन्तु परिस्थितियों से विवश होकर अपने अनाप-शनाप खर्चों को पूरा करने के लिए उन्हें किसानों का शोषण करना पड़ता है। प्रेमचंद जी ने रायसाहब को **'रंगा सियार'** कहा है अर्थात् वे देखने में तो अन्य जमींदारों से अलग लगते हैं किन्तु वास्तव में वे उतने ही क्रूर, निर्दय, स्वार्थी जमींदार हैं जितने अन्य जमींदार होते हैं। उनकी कथनी एवं करनी में एकरूपता नहीं है। वे बातें तो बड़ी ऊंची-ऊंची करते हैं यथा, **''किसी को भी दूसरे के श्रम पर मोटे होने का अधिकार नहीं है। उपजीवी होना घोर लज्जा की बात है। कर्म करना प्राणिमात्र का धर्म है।''** किन्तु किसानों के शोषण में पीछे नहीं रहते। मेहता जी उनकी पोल खोलते हुए कहते हैं, **''आपकी जबान में जितनी बुद्धि है काश उसकी आधी भी मस्तिष्क**

में होती। खेद यही है कि सब कुछ समझते हुए भी आप अप विचारों को व्यवहार में नहीं लाते।''

रायसाहब किसानों के शुभेच्छु बनते हैं, पर उन प रियायत तनिक भी नहीं करते। वे भी नजराने लेते हैं, बेगा लेते हैं, इजाफा लगान वसूल करते हैं, उन्हें कोड़ों से पिटवा की धमकी देते हैं। उनकी बातें तो कम्यूनिस्टों जैसी हैं पर जीव है रईसों जैसा, उतना ही विलासमय एवं स्वार्थ से भरा हुआ।

जमींदार अधिकार के नाम पर किसान को कोई रियायत नहीं देता, हां उन पर दया करके, उन्हें अपनी प्रजा समझक उनको मदद दे सकता है। रायसाहब की उपयोगिता गोदान म दो दृष्टियों से है। एक तो वे जमींदार वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे पात्र हैं, जो किसानों के शोषण से सीधे-सीधे जुड़े हुए हैं। दूसरे वे गोदान की दोनों कथाओं—नगर की कथा एवं ग्राम्य जीवन की कथा को जोड़ने वाले सेतु हैं। उनका सम्बन्ध नगर के मित्रों—मेहता, खन्ना, सम्पादक ओंकारनाथ, श्याम बिहारी तंखा, मिर्जा खुर्शेद, मालती जैसे पात्रों से भी है और होरी दातादीन, नोखेराम, आदि ग्रामीण पात्रों से भी है।

रायसाहब के चरित्रांकन द्वारा प्रेमचंद ने सामन्ती व्यवस्था के जर्जर होते रूप को प्रस्तुत किया है। रायसाहब की अमीरी एवं विलासिता के वर्णन द्वारा होरी की निर्धनता, लाचारी एवं अभाव और भी अधिक उभारा जा सका है। रायसाहब बदलते हुए युग के जमींदार हैं। वे विचारों से प्रगतिशील किन्तु कार्य से प्रतिक्रियावादी हैं। उपन्यास के अन्त में रायसाहब की पुत्री मीनाक्षी का विवाह विच्छेद हो जाता है और उनका पुत्र रुद्रपाल

... गोदान की दोनों कथाओं—नगर की कथा एवं ग्राम्य जीवन की कथा को जोड़ने वाले सेतु हैं। उनका सम्बन्ध नगर के मित्रों—मेहता, खन्ना, सम्पादक ओंकारनाथ, श्याम बिहारी तंखा, मिर्जा खुर्शेद, मालती जैसे पात्रों से भी है और होरी दातादीन, नोखेराम, आदि ग्रामीण पात्रों से भी है।

रायसाहब के चरित्रांकन द्वारा प्रेमचंद ने सामन्ती व्यवस्था के जर्जर होते रूप को प्रस्तुत किया है। रायसाहब की अमीरी एवं विलासिता के वर्णन द्वारा होरी की निर्धनता, लाचारी एवं अभाव और भी अधिक उभारा जा सका है। रायसाहब बदलते हुए युग के जमींदार हैं। वे विचारों से प्रगतिशील किन्तु कार्य से प्रतिक्रियावादी हैं। उपन्यास के अन्त में रायसाहब की पुत्री मीनाक्षी का विवाह विच्छेद हो जाता है और उनका पुत्र रुद्रपाल रायसाहब की इच्छा के विरुद्ध मालती की बहिन सरोज से विवाह कर लेता है। इन दोनों घटनाओं से खिन्न होकर रायसाहब आध्यात्मिकता की ओर झुकते हैं पर उन्हें शान्ति नहीं मिलती। दुख और निराशा ने उन्हें भक्ति की ओर उन्मुख कर दिया। **डॉ. रामविलास शर्मा** ने रायसाहब के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए लिखा है, **"रायसाहब उन हिंसक पशुओं में से हैं जो गरजने और गुर्राने के बदले मीठी बोली बोलना सीख गए हैं। शिकार तो अपनी जान से हाथ धोता ही है लेकिन मीठी बोली सुनता हुआ।"**

वस्तुतः रायसाहब मानव स्वभाव के पारखी हैं। वे जानते हैं कि काम कैसे बनता है। होरी उनका प्रशंसक है किन्तु उसका पुत्र गोबर उनकी असलियत जानकर उनसे घृणा करता है। वह रायसाहब की आलोचना करता हुआ कहता है, **"यह सब धूर्तता है, निरी मोटमर्दी। जिसे दुख होता है, दर्जनों मोटरें नहीं रखता, महलों में नहीं रहता, हलवा-पूड़ी नहीं खाता और न नाच-रंग में लिप्त रहता है। मजे से राज के सुख भोग रहे हैं, उस पर दुखी हैं।"**

होरी रायसाहब को धर्मात्मा और भक्त बताता है क्योंकि वे चार-चार घंटे पूजा करते हैं किन्तु गोबर कहता है, **"यह**

पाप का धन पचे कैसे, इसलिए दान-धर्म करना पड़ता है। एक दिन खेत में ऊख गोड़ना पड़े तो सारी भक्ति भूल जायें।''

रायसाहब के एक अन्य आलोचक मिस्टर मेहता हैं, जो जानते हैं कि रायसाहब के सिद्धान्त एवं व्यवहार में भारी अन्तर है। वस्तुतः रायसाहब उस सामंती व्यवस्था के प्रतिनिधि हैं जो पतनशील हो चुकी थी और इसीलिए अब मीठी छुरी से वार करना सीख रही थी। राष्ट्रवाद की रामनामी चादर ओढ़कर वे लूट-खसोट को अपना अधिकार समझे हुए थे।

जमींदार वर्ग की मजबूरियों का भी यथार्थ चित्रण रायसाहब के कथनों में प्रेमचन्द ने गोदान में किया है। जमींदार अंग्रेज हुक्कामों के तलवे चाटने तथा अधीनों का खून चूसने के लिए विवश है, इसका उल्लेख रायसाहब के इस कथन में है—**''जिसकी चोटी दूसरों के पैरों के नीचे दबी हो, जो भोग विलास के नशे में अपने को बिल्कुल भूल गया हो, जो हुक्काम के तलवे चाटता हो और अपने अधीनों का खून चूसता हो, उसे मैं सुखी नहीं कह सकता। वह तो संसार का सबसे अभागा प्राणी है। साहब शिकार खेलने आएं या दौरे पर, मेरा कर्तव्य है कि उनकी दुम के पीछे लगा रहूं। उनकी भौंहों पर शिकन पड़ी और हमारे प्राण सूखे।''**

वे मानते हैं कि मुफ्तखोरी ने उन्हें अपंग बना दिया है। उन्हें अपने पुरुषार्थ पर लेशमात्र भी विश्वास नहीं है, किन्तु जमींदारी की सुख सुविधाएं कोई अपने आप नहीं छोड़ देता है। यदि कानून बनाकर जमींदारी समाप्त कर दी जाए, तो वे सहर्ष तैयार हैं।

समग्रतः यह कह सकते हैं कि रायसाहब जमींदार वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले एक प्रभावशाली पात्र हैं। वे प्रेमचंद के अमर पात्रों में से एक हैं तथा उन्हें पूरी तरह खल पात्र नहीं कहा जा सकता। प्रेमचंद यह निरूपित करना चाहते थे कि उनकी प्रवृत्तियां एवं कमियां उनकी परिस्थितियों से उत्पन्न हैं। अपनी करनी के लिए वे स्वयं उतने उत्तरदायी नहीं जितनी कि वे परिस्थितियां उसके लिए जिम्मेदार हैं।